Content

विषय-सूची

प्राक्कथन 1

अध्याय : १ - पत्र-साहित्य : सैद्धान्तिक विवेचन 22

पत्रों का महत्व

पत्र का व्युत्पत्यर्थ एवं अभिधेयार्थ

पत्र की विविध परिभाषाएं

(१) पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाएं

(२) हिन्दी विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाएं

(३) निष्कर्ष

पत्र-विधा की प्रमुख विशेषताएं :

(१) प्रकाशन के लिए अनभिप्रेतता, (२) प्रसिद्ध व्यक्तियों के उत्प्रेरक तथा मनोरंजक पत्रों का प्रकाशन (३) लेखक के वास्तविक व्यक्तित्व का उद्घाटन (४) पारस्परिक मैत्री-भावना या आत्मीयता की झलक (५) समकालीन घटनाओं की विवृति (६) वार्तालाप की ध्वनि (७) स्वत: पूर्णता (८) भावग्राहक के व्यक्तित्व की झांकी

पत्र का अन्य विधाओं से सम्बन्ध :

(१) पत्र और पत्र-गीति (२) पत्र और आत्मकथा (३) पत्र और जीवनी (४) पत्र और निबन्ध (५) पत्र और संस्मरण (६) पत्र और रेखाचित्र (७) पत्र और डायरी (८) पत्र और पत्रकारिता ।

पत्र के तत्व :

(१) वर्ण्य विषय (२) विभिन्न व्यक्तियों तथा घटनाओं के सम्बन्ध में लेखक की प्रतिक्रिया (३) परिवेशांकन (४) भाषा-शैली (५) उद्देश्य

पत्रों का वर्गीकरण :

(१) संस्कृत विद्वानों द्वारा किया गया वर्गीकरण

(२) पाश्चात्य विद्वानों द्वारा किया गया वर्गीकरण

(३) हिन्दी विद्वानों द्वारा किया गया वर्गीकरण

निष्कर्ष ।

अध्याय : २ - पत्र-साहित्य की पृष्ठभूमि तथा हिन्दी में उसका विकास 86

पत्र-साहित्य की पृष्ठभूमि :

पत्र-लेखन की प्राचीनता, संस्कृत में उपलब्ध पत्र-साहित्य का स्वरूप, पाश्चात्य पत्र-साहित्य का संक्षिप्त विकास, हिन्दी पत्र-लेखन की प्राचीन परम्परा, आधुनिकता, नवजागरण और पत्र-साहित्य

हिन्दी में पत्र-साहित्य का विकास :

भारतेन्दु द्वारा निर्मित नये चाल के पत्र, हिन्दी का प्रथम पत्र-संग्रह, हिन्दी में प्रकाशित अन्य पत्र-संग्रहों का संक्षिप्त परिचय, हिन्दी के विविध ग्रंथों तथा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित पत्र-साहित्य

प्रकाशित सामग्री के आधार पर हिन्दी पत्र-साहित्य के विभिन्न चरणों का विश्लेषण :

(१) पूर्व-भारतेन्दुयुगीन पत्र-साहित्य
(२) भारतेन्दुयुगीन पत्र-साहित्य
(३) द्विवेदीयुगीन पत्र-साहित्य
(४) वर्तमानयुगीन पत्र-साहित्य

निष्कर्ष।

अध्याय : ३ - हिन्दी के प्रमुख पत्र-लेखक, उनका पत्र-साहित्य और पत्रों में प्रतिबिम्बित उनका व्यक्तित्व 199

पत्र-साहित्य और व्यक्तित्व

व्यक्तित्व की परिभाषा

पत्रों में प्रतिबिम्बित व्यक्तित्व का स्वरूप

साहित्यिक क्षेत्र के प्रमुख पत्र-लेखक :

(१)भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (२) महावीरप्रसाद द्विवेदी
(३)पद्मसिंह शर्मा (४) प्रेमचन्द (५) बनारसीदास चतुर्वेदी
(६)सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (७)सुमित्रानन्दन पन्त
(८)यशपाल (९)डा० वासुदेवशरण अग्रवाल(१०) बाबू वृन्दावनदास (११) हरिवंशराय बच्चन

साहित्येतर क्षेत्रों के प्रमुख पत्र-लेखक :

(१)महर्षि दयानन्द सरस्वती (२) महात्मा गांधी

(३)सेठ जमनालाल बजाज (४) आचार्य विनोबा भावे

निष्कर्ष।

अध्याय : ४ - हिन्दी पत्र-साहित्य में समसामयिक सन्दर्भ 326

पत्र-साहित्य और समकालीन इतिहास

हिन्दी पत्र-साहित्य में प्राप्त समसामयिक सन्दर्भों का विभाजन :

(१) राजनैतिक सन्दर्भ :

(क)पूर्व-नवजागरणकालीन राजनैतिक गतिविधियों के सन्दर्भ

(ख)नवजागरण और स्वाधीनता संग्रामकाल की राजनैतिक गतिविधियों के सन्दर्भ

(ग)वर्तमानयुगीन राजनैतिक गतिविधियों के सन्दर्भ

(२)सामाजिक सन्दर्भ :

(क)पूर्व-नवजागरणकालीन सामाजिक परिस्थितियों के सन्दर्भ

(ख)नवजागरणकालीन सामाजिक परिस्थितियों के सन्दर्भ

(ग)वर्तमानयुगीन सामाजिक परिस्थितियों के सन्दर्भ

(३) धार्मिक सन्दर्भ :

(क)पूर्व-नवजागरणकालीन धार्मिक प्रवृत्तियों के सन्दर्भ

(ख)नवजागरणकालीन धार्मिक प्रवृत्तियों के सन्दर्भ

(ग)वर्तमानयुगीन धार्मिक प्रवृत्तियों के सन्दर्भ

(४)साहित्यिक सन्दर्भ :

(क)साहित्यिक वाद-विवादों और आन्दोलनों के सन्दर्भ

(अ)भाषा-सम्बन्धी वाद-विवादों के सन्दर्भ :

(i)हिन्दी-उर्दू-हिन्दुस्तानी विवाद

(ii)ब्रजभाषा और खड़ी बोली विवाद

(iii)भाषा की अनस्थिरता-सम्बन्धी विवाद

(iv)विभक्ति-विवाद

(आ) प्रवृत्ति और नीति-विषयक आन्दोलन :
(i) छायावादी आंदोलन
(ii) घासलेटी साहित्य विरोधी आन्दोलन
(iii) वर्तमान धर्म-विवाद
(iv) "कस्मै देवाय" आन्दोलन
(v) दुलारे-दोहावली-दंगल
(vi) जनपदीय आन्दोलन
(ख) साहित्यिक चोरी के सन्दर्भ
(ग) साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं की स्थिति और सम्पादकों के पारस्परिक राग-द्वेष के सन्दर्भ
(घ) साहित्यिक समारम्भों, गोष्ठियों आदि के सन्दर्भ
निष्कर्ष।

अध्याय : ५ - हिन्दी पत्र-साहित्य में शिल्प और शैली 410

शिल्प और शैली का परस्पर सम्बन्ध
हिन्दी पत्र-साहित्य में शिल्प और शैली :
(क) हिन्दी पत्र-साहित्य में लेखन-पद्धति का वैविध्य :
(१) शीर्षक या सिरनामा लिखने की रीति में वैविध्य
(२) सम्बोधन तथा अभिवादन की विधि में वैविध्य
(३) परिचय और हस्ताक्षर की प्रणाली में वैविध्य
(४) "पुनश्च" में उद्घाटित तथ्यों में वैविध्य
(५) औपचारिक पत्रों की लेखन-पद्धति में वैविध्य
(ख) हिन्दी पत्र-साहित्य में भाषा-विधान :
(१) शब्दरूप (२) वाक्य-रचना (३) विरामादि चिह्नों का प्रयोग (४) मुहावरों का प्रयोग (५) कहावतों का प्रयोग (६) अलंकारों का प्रयोग
(ग) हिन्दी पत्र-साहित्य में विविध गद्य-शैलियां :
(१) तत्सम पदावली-सम्पन्न शैली (२) तद्भव पदावली सम्पन्न शैली (३) उर्दू-गर्भित शैली (४) मिश्रित शैली (५) व्यास शैली (६) समास शैली (७) मुहावरेदार शैली (८) सूक्ति या उद्धरण शैली (९) मणिप्रवाल शैली

(घ) हिन्दी पत्र-साहित्य में भावगत शैलियां :

(१) विनोदात्मक शैली (२) आत्म विश्लेषणात्मक - शैली (३) आत्म-चिन्तन शैली (४) तर्क प्रधान या विवेचनात्मक शैली (५) प्रमाण-बहुला शैली (६) व्यंग्यात्मक शैली (७) आवेग शैली (८) अन्तर्द्वन्द्व व्यंजक शैली (९) उपदेशात्मक शैली (१०) दृष्टान्त शैली ।

निष्कर्ष

अध्याय : ६ : उपसंहार : हिन्दी पत्र-साहित्य की उपलब्धियां, सीमाएं और सम्भावनाएं । 484

परिशिष्ट : 495

ग्रंथानुक्रमणिका तथा अन्य सहायक सामग्री :

१- प्रमुख उपजीव्य ग्रंथ

२- सहायक ग्रंथ

३- कोश ग्रंथ

४- टंकित वृत्तियां

५- पत्र-पत्रिकाएं

६- अन्य सामग्री ।